A Collection of Hindi Short Stories

2013

छोटी कहानियों की भावनापूर्ण संग्रह

HINDI
FICTION

A COLLECTION OF SHORT STORIES

Dr Ram L Prasad & Mrs Saroj K Prasad

A Collection of Short Stories

Ram Lakhan Prasad

&

Saroj Kumari Prasad

छोटी कहानियों का दिलचस्प संग्रह

राम लखन प्रसाद और सरोज कुमारी प्रसाद

Contents

१. तकदीर की लकीर
2. उँजाले की परी अँधेरे की कली
3. गुलाबो की कौशल
4. अपराधी कौन ?
5. करीना का कमाल आतंकवादी का धमाल
6. आज नहीं तो कल
7. जीना इसी का नाम है
8. लौट के आ जा मेरे लाल
9. प्रीत किये सुख होय
10. साजन की पड़ोसन
11. प्यार का बन्धन
12. गांव की दिवाली
13. उस का रोना गजब हो गया
14. मथुरा के कंस बने मेहनान हमारे
15. शैतान से सौदा फरिशता का ज्ञान
16. अपहरण
17. प्रीत की रीत
18. अधिकार

१.

तकदीर की लकीर

यह एक और कल्पित रचना है।

किसी भी जीवित या मृतक व्यक्ति से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है।

मीरा की सवारी खुले सड़क पर हौले हौले दौड़ रही थी। उस की सवारी आगे बढ़ती चली जा रही थी। मीरा अपने चलती हुई गाड़ी के खिड़की से बाहर का नज़ारा देख रही थी और ना जाने अपने तकदीर के लकीर के बारे में कया कया सोच रही थी।

हाय रे बिडम्बना ! तुम ने इस बच्ची पर कैसे कैसे जुलम ढ़ाये हैं। तुम को जरा भी दया नहीं आई ऐसा करते हुये ! लेकिन तुम्हारा कया कुसूर है भगवन, जब मीरा का ही भाग्य फूटा हुआ नज़र आ रहा है। पर तुम अपने परम भक्त के लिये कुछ तो कर सकते हो। ओ हां ! तुम्हारे घर में देर है पर अंधेर नहीं हो सकता। अब इस का भी एहसास हम कर लेंगे, मेरे मालिक।

जिस गली से मीरा की सवारी गुजर रही थी वहां के सभी स्थान गंदगी, बदबू, हल्ला गुल्ला, दुख दरिद्रता और दीनता से भरे पड़े थे। कहीं भी किसी प्रकार की सुख, खुशी और अमन चैन की एक भी चिन्ह नज़र नहीं आ रही थी। इस मुहल्ले की दुर्दशा देख कर ऐसा मालूम पड़ रहा था कि दुनियां की सब से गलिक्ष जगह बस वही था।

लेकिन कुछ दूर चलने के बाद सभी दृष्य सुन्दरता मे बदलने लगे थे। हरे भरे गन्ने के खेत, लहराते हुये आम के बगीचे, लहराती और बहती हुई नदी नाले, ऊचे ऊचे पेड़ और पहाड़ तथा मनोरम सुहाना वातावरण। यही सीतापुर की खूबी थी जहां मीरा की पदार्पन हुई थी।

यही नियम इनसान के जीवन के लिये भी लागू है । हर मैल धोने से साफ हो जाती है । हर दुख समय आने पर सुख मे बदल जाती है । हर बुराई भी आहिस्ते आहिस्ते अच्छाई मे तबदील हो जाती है ।

गनीमत तो इस बात की थी कि अब मीरा को इसी गली में रह कर या तो जीना था या फिर मरने की तैयारी करना था । इस पहेलू का चुनाव खुद मीरा को करना था पर उस के लिये यह बहुत कठिन लग रहा था । मीरा के पिता सेठ मनमोहन लाल ने उसे अपने आलीशान मकान से निकाल दिया था । मीरा को बेकुसूर ही निर्वासन कर दिया गया था । पर कयों ?

किसी को इस से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था कि मीरा इस गंदी गरीब गली में जीवित रहे, खुश रहे, दुखी रहे या फिर अपने जीवन को अन्त कर ले । खास कर के उस के पिता को जिन के पास राजा दसरथ से एक ज्यादा, चार बीबियां थी, बेजोड़ धन दौलत था, अकथ मान मर्यादा और लाखों की अथाह मिलकियत थी । वे भी कोई राजा महराजा से कम नहीं थे । सेठ जी सिडनी के ही नहीं पर पूरे ओस्ट्रेलिया के लगभग सब से बड़े ब्यापारी माने जाते थे ।

आज जिस नाजुक और बेसहाय हाल में तथा जिस दर्दनाक मार्ग पर मीरा को पटक दिया गया था वह उस के पिछले खुशहाल, विलासिता, चमक दमक की जीवन से बहुत ही भिन्न थी । कहां महलो की रानी, सेठ की इकलौती बेटी, महारानी मां की दुलारी और कहां आज की लावारिस मीरा । आज उसे वही सब अपने

हितैषियों ने दूध में गिरी मक्खी के तरह अपने खुशहाल जिन्दगी से निकाल कर फेंक दिया था।

अपने बचपन से ही मीरा लाड़ प्यार में पली थी, दुलार की दुनिया में सजी थी, चमक दमक के वातावरण में चली थी पर आज उस का जीवन ही बदल गया था। वह बेघरबार हो गई थी। पिछले जीवन में मीरा को न खाने पीने की कोई कमी थी, न ही पहनने ओढ़ने की कोई फिकर थी और न ही मौज मनाने की कोई रुकावट रही। उस के आस पास नौकरों की भीड़ लगी रहती थी तथा पढ़ने लिखने की उत्तम से उत्तम प्रबन्ध था। संगीत कला, नृत्य, कविताये और अन्य कला तथा हुनर सीखने की पूरी आज़ादी थी। हां यह सब केवल वह अपने पिता के महलो के चार दिवारियों के अन्दर ही कर सकती थी।

आज मीरा का भाग्य बदल चुका था। यही समय का चक्र था। यही विधि की विधान थी और समय की फेर थी। आज मीरा एकदम अकेली हो गई थी। न पिता का महल, न उन का प्यार और देखभाल और न ही माता का सहारा। पर मीरा के पास एक कुदरत की महान देन थी। उस की बेजोड़ खूबसुरती, अदभुत सुन्दरता, परिपूर्ण व्यक्तित्व, मीठे बचन, खुशमिज़ाज, कोमल मनोभाव और प्यारा हंसमुख मनमोहनी चेहरा। वह जितना अंदर से प्रिय थी उतना ही बाहर से प्यारी लगती थी। इन गुणों और बनावटों को कोई भी उस से छीन नहीं सकता था। यह सब उस के अपने थे।

कोई भी जनमदाता ऐसी सुकन्या को पा कर मारे खुशी से नांच उठते पर सेठ मनमोहन लाल की दिमाग ही फिरा दी गई थी

कि उन्हों ने अपनी प्यारी इकलौती पुत्री को सभी सुखों और सहारे से वंचित कर दिया था । यह कैसे और क्यों हुआ इस को जानने के लिये उन के घरेलू मामले की छानबीन करने की जरूरत है ।

मीरा की मां आरती, सेठ मनमोहन लाल की सब से पहली, प्यारी और अति प्रभावशाली पत्नी थी । अगर वह भयानक,दारुण और अकल्पित घटना वैसे अचानक न हो जाती तो मीरा सम्भवता वही आनन्दपूर्ण तथा मगन जीवन उन महलो के चार दिवारियों के अंदर ही बिताती रहती । पर होनी ने अपना बल दिखा ही दिया और सिर्फ बारह वर्ष की मीरा की खुशहाल जीवन का एकाएक अन्त हो गया ।

मीरा की मां आरती ने एक दिन अपने व्योपार के सब से सत्यवादी क्रमचारी देवदास के साथ अपने पति, अपना सभी राजपाट और माल खजाना त्याग कर सब दिन के लिये उस के साथ चली गई । इसे धोखा कहा जाय या वासना की शक्ति । दोनों ही सेठ जी के लिये जखमी थे ।

सेठ जी के पेट, सारे शरीर, दिल, दिमाग और पूरे मर्दागनी तथा पुरुषार्थ पर इस का बहुत बड़ा, बुरा, गहरा और असहाय असर हुआ । आरती और देवदास के इस धोखे ने उन को चकना चूर कर दिया था । वे हर तरह से टूट चुके थे । वे धीरे धीरे अपने जीवन से निराश होने लगे थे तथा अपने व्यापारिक, पारिवारिक या घरेलू जिम्मेदारियों से मुह मोड़ने लगे थे पर उस की अन्य बीबियों ने उन की सहायता में लग कर उन को इस दुखित समय से निकालने की कोशिश कर रही थी ।

सेठ जी की सब से छोटी बीबी रेखा बड़ी अभिलाषी, धुनी और लालसी थी इसलिये उस ने अन्य दो बीबियों के साथ मिल कर एक ऐसा षढयन्त रचा कि सेठ जी उस मे बुरी तरह फंस गये। उन की चाल पूरे तौर पर सेठ जी पर चल ही गई। उन का कहना था कि जब मीरा की मां ने सेठ जी के साथ इतना बड़ा विश्वासघात किया है तब उन की बेटी भी आगे चल कर अपने मां के तरह नागिन बन जायेगी कयों कि वह अभी से ही अपने मां के रकम लगने लगी थी और कार्य भी उसी के तरह करने लगी थी । उन का प्रस्ताव था कि मीरा अपने कुकर्मो से पूरे परिवार को नष्ट भ्रष्ट कर के सब की मनो कामनाओं को नेसतानाबूत कर देगी।

आखिर में सेठ जी अपने तीनों बीबियों के षढयन्त में फंस ही गये और उन की बात मान कर मीरा को घर से निकाल देने का फैसला कर ही दिया। उन के दिल और दिमाग तो पहले से ही टूट चुके थे और अब उन की समरण शक्ति भी खो चुकी थी। सेठ जी अब अपने प्यारी पुत्री मीरा से दूर ही रहने लगे थे। उन को पूरा विश्वास हो गया था कि एक दिन आगे चल कर मीरा अपने मां आरती की तरह उन को धोखा दे ही देगी। बस वे अपने अन्य बीबियों की बाते मान कर मीरा को अपने चचेरे भाई नरेश के पास भारत के उत्तर प्रदेश के एक छोटा सा शहर के लिये भेज दिया।

मीरा के भव्य महल, बड़े घर आंगन, रंग बिरंगे फव्वारे, बगीचे मे भांति भांति के चिड़ियों की चहचहाहट, उत्कृष्ट भोजन पानी, तथा उस के सुख शान्ति के सभी वातावरण अब उस के पीछे छूटने जा रहे थे। थोड़ी ही दिनों में यह सब मनोरंजन और खेल कूद के साधन उस की अतीत बन कर रह जायेंगी ।

उस सुखी जीवन में भी मानो मीरा का बचपन एक कैद ही था। मीरा को कहीं अकेले आने जाने की आज़ादी कभी भी नहीं दी गई थी क्योंकि वह बहुत ही सुन्दर थी और उस के परिवार वालो को यह डर था कि कहीं उस परी जैसी सुनहरी गुडिया को कोई चुरा न ले जाये। मीरा को यह जान कर की उस के सभी आमोद प्र मोद के साधन छूट रहे थे कुछ दुख तो जरूर हुआ पर अब थोड़ी ही दिनो मे वह आज़ाद पक्षी के तरह उड़ने वाली थी।

नरेश दिल्ली के पूरब में दो सौ मील दूर इस छोटे से किसानों की बसती मे एक साधारण कपड़े का दुकान का मालिक था और अपने छोटे से परिवार का निर्वाह एक मामुली तौर पर कर रहा था। उन के नरेशनिवास में उन के पत्नी के अलावे उन के भाई सुरेश के परिवार भी रहते थे। नरेश और नीलम के पास अपने कोई बच्चे नहीं थे।

मीरा के आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे जब सेठ मनमोहन लाल के महल से उसे बिदा किया गया। आज वह उस घर आंगन को पहली और आखरी बार एक दम से छोड़ कर जा रही थी जहां उस का बचपन बीता था।

बारह वर्ष के इस कच्ची उमर मे ही उस पर एक गजब की बिजली गिर पड़ी थी। इस अप्रत्याशित अचानक घटना के कारण उस के जीवन मे एक बहुत बड़ा तूफान आने वाला था। लेकिन यह कुदरत की करतूत थी कि हर तूफान के बाद महौल में स्थिरता आ जाती है। मीरा का भी दिन लौटेगा और उस के दुख के बादल उस के सामने से हट जायेंगे। यह उस का अटल विशवास था।

मीरा को सिडनी एयरपोट पर से हवाई जहाज द्वारा लखनऊ जाना था जहां से उसे नरेश के घर वाले सीतापुर ले जाने के लिये आयेंगे। यह सब इन्तजाम सेठ जी के क्रमचारियों ने मीरा के लिये कर दिया था। लगभग आठ घण्टे के बाद मीरा दिल्ली पहुची जहां से उस को दो घण्टों के बाद लखनऊ पहुचाया गया। मीरा अभी भी सुसुक सुसुक कर रो रही थी।

पाठक अब मीरा के निर्वाचन का सही कारण जान गये हैं तब अब आगे मीरा की जिन्दगी ने कया गुल खिलाया यह जानने के लिये हमे सीतापुर के कपड़ों के दूकानदार नरेश से मिलना पड़ेगा।

लखनऊ एयरपोट से सीतापुर की यात्रा उन दिनों बड़ी कठिन थी। ऊबड़ खाबड़ रास्ते थे और नरेश की पुरानी खुड़खुड़िया मोटर गाड़ी को उन का बूढ़ा डरायबर हीरा मीरा को लिये धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था। मीरा को लगा जैसे उन का सफर खतम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। अब यहीं उस का जीवन का अन्त होने वाला है। धन्य है उस के मैयभा या सौतेले माताओं का जिन के सौजन्य और षढयन्त के कारण आज मीरा इस अनजाने स्थान में पहुँच गई थी।

यह सब मीरा को उन कहानियों के तरह लग रहे थे जिन्हे बचपन मे उस की माता उसे सुलाने के लिये खाट पर बताया करती थी। पर आज अचानक मीरा खुद उस भयानक और अनजान जगह पर थी। यहां वह मानवता की छोटी छोटी पहाड़ियों और सौंदर्य तथा कुरूपता के उलझन के बीच से गुजर रही थी। एक तरफ ऊंचे ऊंचे मिनार थे तो दूसरे ओर मलिन बस्तियां बसीं

थी। वहां रंक के बीच राजा भी थे तथा लक्जरी के सामने निर्धनता भी चमक रही थी।

मीरा सोच रही थी कि क्या यही वह जगह है जहां उस डरी हुई असहाय कली को अपना नया जीवन बिताने के लिये भेजा गया है। यह सब तो शायद उस की जान ही ले लेंगे। अब इस हालत मे वह क्या करे ? जिये या मरे ? किसी को क्या फर्क पड़ेगा। इस दुखित दशा को तो खुद उसे ही सहन करने के लिये भेजा गया है। उस ने अपने आप से कहा, *चल मीरा इन वादियों के गले लग जा।*

लेकिन पुरानी मीरा कहीं सिडनी में खो गई थी और अब एक नई मीरा ने सीतापुर में अपने नरेश काका के घर जन्म ले लिया था। ठीक एक घण्टे बाद मीरा का सफर समाप्त हुआ और वह अपने काका नरेश के घर के अन्दर थी। उस के सामने एक साधारण लम्बा चौड़ा, हट्टा खट्टा अधेड़ आदमी खड़ा था। यही मीरा का नरेश काका था।

"मेरे सेठ भाई की एकलौती बेटी मीरा का हम तहेदिल से अपने छोटी सी कुटिया में स्वागत करते हैं। मुझे मेरी सिडनी की राज कुमारी से मिल कर बहुत खुशी हुई। मीरा बेटी, आज से तुम हमारे इस विनम्र नरेशनिवास के क्षत्रछाये मे खूब उन्नति करो और फूलो फलो। तुम्हारे लिये यही हमारी निजी दुआ है।" मुस्कुराते हुये नरेश काका मीरा को अपने गोद मे लेते हुये चूम कर कहा।

सचमुच यह नरेशनिवास कोई विनम्र या साधारण घर नहीं था। हां यह मीरा के पिता के सिड़नी के महल से कोइ मेल नहीं

खाता था। यहां के और सभी घरों के मिलान में यह नरेशनिवास मीरा के लिये अति सुन्दर, सुखद और शान्तिपूर्ण स्थान लग रहा था। वास्तव में मीरा वहां खूब सुख पाई और फूली फली क्योंकि नरेश काका और नीलम काकी ने अपना सब प्यार दुलार उसी पर निवछावर कर दिया था क्योंकि उन की अपनी कोई अवलाद नहीं थी।

अपने जीवन भर नरेश और नीलम सेठ मनमोहन लाल के बहुत ही आभारी थे क्योंकि वे अपनी एकलौती बेटी मीरा को उन के सुपुर्द कर दिये थे। यह उन के लिये समझो एक कुदरती देन थी और वे मीरा को दिलो जान से देख भाल कर रहे थे। मीरा को यहां उस के पिता के महलों की कैदी जीवन के मिलान मे सभी आजादी प्राप्त थी। वह सीतापुर के गलियों, सड़कों, वन उपवन, बाग, मन्दिर, दर और दुकान के सभी दृष्टि, सब कोलाहल तथा सब महक की पहचान धीरे धीरे करती गई।

धीरे धीरे वही सीतापुर जो शुरू शुरु मे बुरी लग रही थी आज एक नयनाभिराम, मनोरम और अति सुन्दर स्थान बन चुकी थी। यह सब मीरा के नये परिवार के लाड़ प्यार की नतीज़ा थी और उस के साथी निर्मल की मेहरबानी रही।

पिछले चार वर्षो ने सीतापुर की सभी उध्योगी, समाजिक और व्यवसायिक शान्तिपूर्ण गुंजन मीरा के रग रग में समा गये थे। यह सब उस के इस नये जीवन में बेहद उत्तेजना भर दिये थे और एक अजीब तहलका मचा दिया था। मीरा की जिज्ञासा, कौतुहलता और अभिलाषा इतना बढ़ गई थी कि वह अब अपने सोलह साल की उम्र में एक इक्कीस साल की विद्वान और निखरी हुई युवती नज़र

आ रही थी। यह सब नरेश और नीलम के करकमलो की करिशमा थी।

अब हर रोज मीरा एक अति शिक्षित, होनहार और सुन्दर यूवती का रूप धारण करने लगी थी। वह फूल सी कली अब और भी निखर चुकी थी। सीतापुर के सभी लोग उस से बहुत प्रेम करने लगे थे। सीतापुर से उस का लगाव इतना बढ़ गया था कि जब उस के काका काकी उसे दिल्ली की सैर कराने ले जाना चाहते थे तो उस ने कहा, "काका जी, मैं दिल्ली नहीं जाना चाहती क्योंकि मुझे सीतापुर मे ही रह कर अपने पढ़ाई लिखाई पर ध्यान देना है।"

"तुम्हारे बातों से यह लगता है कि दिल्ली की सफर कोई सजा है। मेरी लाडली बेटी, दिल्ली घूमने का शौक हमे बचपन से ही है क्योंकि उस शहर में जाने से दिल खुशी से भर जाता है। लोग कहते हैं कि दिल्ली दूर है पर मेरे लिये मेरी दिल्ली एक हूर है, नूर है, मेरा सुरूर है जहां जाना जरूर है।" नरेश काका ने मीरा को समझाने की कोशिश किया पर उस के जिद्द के आगे सब दिन के तरह काका जी को आज भी झुकना ही पड़ा।

मीरा के काका काकी उस को अपने भाई सुरेश के परिवार के हवाले कर के दो हफते के लिये दिल्ली चले गये। उन के गैरहाजरी में उन के व्यापार का देखरेख उन का हितैषी नौकर रमनलाल करने जा रहा था। रमनलाल वहीं पड़ोस में अपने छोटे से परिवार के साथ रहता था। उस के बेटे निर्मल और मीरा

बचपन से ही साथ साथ खेले कूदे और पढ़े लिखे थे। पर अब वे दोनो बच्चे नहीं रहे यह बात किसी ने नहीं जाना।

निर्मल एक सतरह साल का खुशहाल, चंचल, बेफिक्र, सुडौल, घुंघराले बालों वाला, सदा हँसमुख, निखरा हुआ होनहार युवक था जिस की गणित में खास योग्यता या कौशल थी। शायद इसी लिये उस के पिता रमनलाल उस के लिये भविष्य में खुद का कोई बड़ा व्यापार करने की आंत्रिक चाह लिये बैठे थे। उन का ऐसा विचार ठीक ही था क्योंकि धीरे धीरे सीतापुर सर्वदेशीय बनता जा रहा था और वहां के बासिन्दे दुनियां के अन्य स्थानों से कदम से कदम मिला कर चलने लगे थे।

रमनलाल तो सदा नौकरी पर भरोसा कर के अपने परिवार का निर्वाह कर रहा था पर उस के जमाने और निर्मल के भविष्य में जमीन आसमान की फर्क होने लगी थी। निर्मल को जमाने को अपने तरफ झुकाने की शक्ति थी और बड़े से बड़े काम करने की हुनर मिल सकती थी। वह अपना भविष्य जैसा चाहे वैसा बना सकता था। पर पिता को यह नही मालूम था कि निर्मल की निजी गुप्त इरादे क्या थे।

निर्मल की उम्मीदे और इरादें व्यापार की ओर नहीं बल्कि वे कहीं और टिकी हुई थी। उस के विचार उस उज्ज्वल, प्रकाशमान, रोशन तथा अत्यन्त खूबसूरत रूप मे फंसे हुये थे जो नरेश की बेटी मीरा के पास थी। मीरा को वह अंदर ही अंदर चाहने लगा था।

निर्मल पहली बार मीरा को उस दिन मिला था जब मीरा एक बारह साल की डरी हुई बच्ची ने सीतापुर मे कदम रखा था। निर्मल उस समय चौदह वर्ष का युवक था जिसे दूसरो के दुख तकलीफ मिटाने की चाह रहती थी। यही कोशिश मे उसी दिन से निर्मल ने मीरा को अपना बना लिया था जिस से मीरा को वह सदा खुश देख सके और उस के साथ मेल जोल बढ़ा सके।

मीरा और निर्मल थोड़े ही दिनों के बाद एक दूसरे के दोस्त ही नही पर खेल कूद तथा दुख सुख के साथी बन गये थे। वे साथ साथ पढ़ने लगे थे और अपने बचपन के अन्य खुशी समय वहां के गलियों, शहर और बाग बगीचे की चक्कर काटते रहे जब कि उन दोनो के पिता दिन रात एक कर के अपने काम मे लगे रहते और अपने व्यापार को प्रोत्साहित करते रहे। समय का चक्र चलता रहा और हितैसियों की हित जमती गई।

निर्मल यह नहीं जान सका कि कब, कैसे और कहां मीरा के प्रति उस की भावना में तबदीली आ गई पर जब मीरा अपनी चौदवी वर्षगांठ मना रही थी तब उस ने एक सजी धजी परी का रूप ले रखी थी। उस के बदन के हर कोने से गुलाब सी महेक, फुलझड़ी सी चमक, नाजुक कली सी लचक, चाँदनी जैसी दमक, लहरों जैसी उलझन, नदियों जैसी बहाव और मोम जैसी नर्मी झलक रही थी। ऐसी कुदरत की अजूबा सूरत और बेजोड़ करामाती मूरत देख कर कोई भी युवक के दिल और दिमाग पर असर तो होगा ही पर मीरा की हर अदा पर उस दिन से निर्मल फिदा हो गया था।

जो भी हो उस दिन से निर्मल का प्यार मीरा जैसी गुडिया के लिये बहुत ही गहरा, गाढ़ा, जुनूनी और मीठा रूप ले चुका था।

यह निर्मल के लिये एक बहुत ही खुशी की बात थी पर इस मे एक अखंडनीय खोट रह गई थी। यही अब निर्मल की सब से बड़ी और कठिन समस्या थी। मीरा निर्मल की सिर्फ एक अच्छी दोस्त थी तथा उस से प्यार नहीं करती थी।

इस आभास का अस्थाई संकेत तब मिला जब मीरा ने निर्मल के भावनाओं का जवाब हँस कर उड़ा दिया। "पागल मत बनो निर्मल ! तुम मेरे भाई समान हो। इस के अलावा, मुझे प्यार वार की जरूरत ही नहीं है क्योंकि मैं कभी शादी ही नही करूँगी।" मीरा को अपने मां का घर छोड़ कर भाग जाना और इस से पिता की मायुसी और निराशा की याद उस के आंखों के सामने नाचने लगे। शायद इसी लिये मीरा शादी जैसे समाजिक बन्धन से नफरत करती थी।

यह जान और सुन कर निर्मल अपने पराजय के हताशा तथा निराशा के पीड़ा से रो पड़ा। उस का दिल टूट गया था। वह सोचने लगा कि न जाने क्यों वह मीरा के साथ एक भाई की तरह बरताव करता रहा। वह क्यों नहीं शुरुआत से ही इस पूजिता देवी के कीमतों को समझ पाया था। वह सोचने लगा कि वह अब कैसे इस जटिल समस्या का हल खोज पायेगा। धीरज ले कर वह बैठ गया। समय बीतता गया।

एक दिन जब नरेश और नीलम अपने छुट्टी पर असट्रेलिया गये थे तब उन के घर मे अचानक आग लग गई। मीरा घर मे अकेले थी क्योंकि सुरेश और उस की पत्नी काम पर थे। उस दिन निर्मल अपने कोलेज से दस बजे ही लौट आया था और जब

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below